स्नातक प्रथम खंड, हिन्दी प्रतिष्ठा के छात्रों के लिए-

चित्रलेखा उपन्यास के आधार पर बीजगुप्त का चरित्र चित्रण करें।

प्राध्यापक- डॉ० सतीश चन्द्र पाठक
हिन्दी विभाग, एस०एस० कॉलेज, जहानाबाद

उत्तर :-

पाप और पुण्य की पृष्ठभूमि पर आधारित उपन्यास 'चित्रलेखा' भगवती चरण वर्मा का एक ऐसा विशिष्ट उपन्यास है जिसने अपने प्रकाशन के साथ ही हिन्दी साहित्य में अपना महत्वपूर्ण स्थान बना लिया था। लम्बी कालावधि बीत जाने के बाद आज भी यह उतना ही प्रासंगिक एवं आकर्षक है जितना प्रकाशन काल में था। इसका मूल कारण है इसके विषय की शाश्वतता। संसार में पाप क्या है और पुण्य क्या है - यह विषय अनन्त काल से पूछा जाता रहा है और आगे भी पूछा जाता रहेगा। बीजगुप्त इसी उपन्यास का नायक है। उपन्यासकार ने बीजगुप्त को पाप-पुण्य के विवेचन का एक उपकरण बनाकर प्रस्तुत किया है जिसके चरित्र को निम्न बिन्दुओं के आलोक में देखा जा सकता है :-

① शालीन एवं सुसंस्कृत व्यक्तित्व :-

बीजगुप्त पाटलिपुत्र का एक धनी सामन्त है। उसके जीवन में भोग एवं विलास के सारे उपकरण उपलब्ध हैं। उसकी विशाल अट्टालिकाओं में भोग-विलास का झूला होता रहता है। दास-दासियों, रथ और सुन्दरियों की भीड़ लगी होती है किन्तु इसका थोड़ा भी अहंकार उसमें नहीं होता। वह सरल चित्त का सुसंस्कृत युवक है। इसके

भीतर सामाजिक मर्यादाओं के प्रति सम्मान का भाव है। वह वैभव के बीच रह कर भी सहज है। यही कारण है कि जब महर्षि रत्नाम्बर श्वेतांक को उसके पास लेकर आते हैं तो वह न केवल उसे आश्रय देता है वरन उसे अपना छोटा भाई मान कर मान भी देता है तथा अपने परिजनों से भी वैसा ही सम्मानजनक व्यवहार करने का संकेत करता है। उसी प्रकार योगी कुमारगिरि के प्रति भी उसके मन में गहरी श्रद्धा है जो समय-समय पर उसके व्यवहार से अभिव्यक्त होती रहती है। इसी प्रकार उसके सम्पर्क में आनेवाले समस्त व्यक्तियों के प्रति उसका व्यवहार अत्यंत शालीन एवं सुसंस्कृत होता है। यही कारण है कि पाटलिपुत्र में उसे सभी सम्मान की दृष्टि से देखते हैं। मृत्युंजय, यशोधरा, श्वेतांक- ऐसे पात्र हैं जिनसे उसकी घनिष्ठता होती है किंतु उसका व्यवहार उन सबके प्रति सम्मानजनक होता है। विपरीत स्थितियों में भी वह अपना धैर्य नहीं खोता वरन अपने व्यक्तित्व में संतुलन बनाने का प्रयास करता है।

(ii) आदर्श प्रेमी :-

बीजगुप्त आदर्श प्रेमी है। राजनर्तकी चित्रलेखा को प्रथम दृष्टि में ही अपना हृदय दे बैठता है और उससे प्रेम की याचना करता है। धीरे-धीरे दोनों का प्रेम गंभीर से गंभीरतर होता जाता है। यहाँ तक कि वह चित्रलेखा को अपनी पत्नी का सम्मान दिलवाता है। उसके प्रेम की पवित्रता को देखकर ही संपूर्ण समाज बीजगुप्त और चित्रलेखा को सम्मान की दृष्टि से देखता है। बीजगुप्त चित्रलेखा को अपने हृदय की गहराइयों से प्रेम करता है। राजनर्तकी होने के बाद भी चित्रलेखा के प्रति उसके मन में गहरा श्रद्धाभाव है। उसके लिए ~~चित्रलेखा~~ चित्रलेखा से रहित जीवन की कल्पना भी असंभव है। यही कारण है कि योगी कुमारगिरि की कुटिया में जब चित्रलेखा और योगी के बीच आकर्षण के भाव को लक्ष्य करता है तो बीजगुप्त

आघात हो उठता है उसे लगता है कि चित्रलेखा
योगी के प्रति आकृष्ट है। उसका हृदय व्यथित हो उठता है
चित्रलेखा को वह प्राणों से भी अधिक प्यार करता है। व
किसी भी परिस्थिति में उससे दूर होने की कल्पना भी नहीं क
चाहता है किन्तु चित्रलेखा तो कुमारगिरि की ओर तेज
आकृष्ट होती जा रही थी। इसी बीच पाटलिपुत्र के ही अन्य
सामन्त मृत्युंजय अपनी कन्या यशोधरा के ~~बीजगुप्त~~
विवाह का प्रस्ताव बीजगुप्त के सम्मुख रखते हैं। बीज
बिना किसी संकोच के स्पष्ट कर देता है कि ~~यशो~~ चित्र
उसकी न केवल प्रेमिका है वरन वह उसकी पत्नी के समा
अतः वह किसी से विवाह की बात सोच भी नहीं सकता
चित्रलेखा, कुमारगिरि ~~व~~ और स्वयं मृत्युंजय भी
तरह से उसे समझाते हैं और विवाह के लिए स्वीकृति
मांगते हैं किन्तु वह चित्रलेखा के अतिरिक्त किसी नारी
बारे में सोच भी नहीं सकता। जब चित्रलेखा बीजगु
छोड़कर कुमारगिरि की कुटिया में आश्रय लेती है तब उसे म
मनाने या वापस बुलाने के लिए वह वहाँ तक जाता है और निरा
लौटकर वह काशी भ्रमण हेतु निकल पड़ता है। यशोधरा अप
पिता के साथ उसकी आत्मा साथ देती है। मृत्युंजय और यशोधरा
उपक्रमों से उसके हृदय के पास आने का प्रयास करते हैं कि
उसका हृदय तो चित्रलेखा के लिए हाहाकार कर रहा है। और
अन्ततः वह यशोधरा से वैवाहिक बंधन में बंधना स्वीकार नहीं क
पाता।